Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक - एकांकी संचय

पाठ - 6 'दीपदान' (एकांकी) लेखक - डॉ० रामकुमार वर्मा

सुप्रभात प्यारे बच्चो।

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक 'एकांकी संचय' की पृष्ठ संख्या - 82 पर दिए पाठ - 6 'दीपदान' नामक एकांकी का अध्ययन करेंगे।

बच्चो! आज हम दीपदान एकांकी के शेष भाग को पढ़ेंगे व समझेंगे। आप सभी अपनी - अपनी पुस्तक तथा उत्तर - पुस्तिका निकाल लें और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ।

'दीपदान' एकांकी डॉ० रामकुमार वर्मा द्वारा रचित एक ऐतिहासिक एकांकी है। महाराणा साँगा की मृत्यु के बाद उनका पुत्र उदय सिंह राजसिंहासन का उत्तराधिकारी था, परन्तु उसकी आयु मात्र चौदह वर्ष होने के कारण महाराणा सांगा के भाई पृथ्वीराज के दासी पुत्र बनवीर को राज्य की देखभाल के लिए नियुक्त किया गया था। कुँवर उदय सिंह की देख रेख और लालन - पालन का कार्य पन्ना धाय कर रही हैं। 'दीपदान' की सम्पूर्ण कथा कुँवर उदय सिंह के कक्ष में घटित होती है। रात्रि का दूसरा पहर है। नेपथ्य में नारियों की सम्मिलित नृत्य - ध्वनि एवं गायन

का स्वर सुनाई देता है, जो धीरे- धीरे हल्का हो रहा है। उदयसिंह आकर पन्ना धाय को बताते हैं कि बाहर सुंदर - सुंदर लड़कियाँ तुलजा भवानी के सामने नाच रही हैं और दीपदान कर रही हैं। कुँवर पन्ना को भी अपने साथ नृत्य देखने के लिए ले जाने की ज़िद करते हैं, किंतु पन्ना इस बात को अस्वीकार कर देती है। वह कुँवर को समझाती है कि तुम चित्तौड़ के सूरज हो, इस राजवंश के दीपक तथा महाराणा साँगा के कुलदीपक हो। तुम्हें इस तरह नाच- गाने को देखने के लिए नहीं जाना चाहिए। यह सुनकर कुँवर रूठ जाते हैं और बिना कुछ खाए- पिए ही ज़मीन पर सो जाते हैं। कुछ समय पश्चात् पन्ना के पास रावल सरूप सिंह की लड़की सोना. प्रवेश करती है। वह पन्ना से कुँवर उदयसिंह को अपने साथ उत्सव में ले जाने के लिए आग्रह करती है। पन्ना को संदेह हो जाता है कि बनवीर के मन में कुँवर उदय सिंह को लेकर षड़यन्त्र का भाव है इसलिए उसने दीपदान का उत्सव, कुसमय आयोजन किया है ताकि लोगों का ध्यान उत्सव में लगा रहे और वह अपने उद्देश्य में सफल हो जाए। पन्ना को लगता है कि कहीं न कहीं सोना भी बनवीर के इस षड़यंत्र में शामिल है अत: वह सोना की बात को नहीं मानती। सोना नाराज़ होकर पन्ना को बुरा- भला कह वहाँ से चली जाती है। सोना के प्रस्थान करने पर पन्ना धाय का पुत्र चंदन प्रवेश करता है। चन्दन पन्ना से सोना के धीरे- धीरे जाने का कारण पूछता है। पन्ना बताती है कि वह कुँवर को बुलाने आई थी, पर मैंने नहीं जाने दिया। चंदन इधर से ध्यान हटाकर पहाड़ी खरगोश की बातें करने लगता है। पन्ना कुँवर की माला के दाने जो टूटकर गिर गए थे, उन्हें पिरो रही थी। तभी सामली ने आकर यह संदेश दिया कि कुँवर का जीवन संकट में है। तुलजा भवानी (चित्तौ

की देवी) भी कुछ नहीं कर पा रही हैं। उसने बताया कि बनवीर ने महाराणा विक्रमादित्य के कक्ष में जाकर उनकी हत्या कर दी है।

बच्चो! अब इस एकांकी को पृष्ठ संख्या 94 से पढ़ेंगे व समझेंगे। सामली पन्ना को बताती है कि इसी डर से वह आपके पास आई है क्योंकि कुछ लोगों ने बनवीर को ऐसा कहते हुए सुना है कि बनवीर कुँवर उदयसिंह को राज्य का उत्तराधिकारी समझकर जीवित रहने नहीं देखा। इस प्रकार वह निष्कंटक (बिना बाधा के) राज्य करेगा। सामली का यह कथन सुनकर पन्ना कहती है कि विलासी और अत्याचारी राजा कभी बिना बाधा के राज्य नहीं कर सकता। आज नहीं तो कल लोग उसके विरुद्ध विद्रोह अवश्य करेंगे। यही विद्रोह उसके अंत के लिए बहुत है। इसी प्रकार सत्ता का लालची और अत्याचारी बनवीर कभी भी निष्कंटक राज्य नहीं कर सकता। सामली पन्ना को बताती है कि बनवीर को किसी का भय नहीं है। उसने पूरे महल को अपना बना लिया है। अतः वह रक्त से भीगी तलवार लेकर बहुत शान से अपने महल में गया है। उसे किसी बात की चिंता नहीं है। उसने सभी सैनिकों को अपनी ओर मिला लिया है। वह यह भी बताती है कि महाराणा विक्रमादित्य निष्क्रिय (कोई काम न करने वाले) राजा थे। प्रजा और सामंत (जागीरदार, मंत्री) भी उनसे असंतुष्ट थे। इसलिए किसी को विक्रमादित्य पर दया नहीं आई। किसी ने बनवीर से दुश्मनी मोल लेना उचित न समझा। अर्थात् राजा तभी तक राजा है जब तक प्रजा उसका सम्मान करती है, प्रेम करती है। राजा का भी कर्तव्य है कि वह अपनी प्रजा का ख्याल रखे और उनके मन में अपने लिए सम्मान की भावना को बनाए रखे।

सामली कहती है कि आज की रात बहुत भयानक है।

यह रात भविष्य के लिए अंधकार लाने वाली है। आज की रात बनवीर सभी उत्तराधिकारियों की हत्या करके बिना किसी बाधा के सदा के लिए सिंहासन पर अधिकार करना चाहता है इसलिए कुँवर की रक्षा आवश्यक है। सामली की बातें सुनकर पन्ना धाय चिंतित हो उठती है और वह कुँवर के प्राणों की रक्षा के लिए उपाय खोजने लगती है क्योंकि मेवाड़ के एकमात्र उत्तराधिकारी केवल कुँवर ही बचे हैं। पन्ना के अनुसार इनकी रक्षा अवश्य होनी चाहिए। दासी पुत्र बनवीर को चित्तौड़ सहन नहीं करेगा। चित्तौड़ को बनवीर जैसा विश्वासघाती राजा नहीं बल्कि अपने राजवंश का रक्त ही चाहिए जो चित्तौड़ के भविष्य को उज्ज्वल कर सके।

सामली कहती है कि उन्हें राजा बनाने वाली बात तो बहुत दूर की है पहले यह बताओ कि तुम उनके जीवन की रक्षा किस प्रकार करोगी। पन्ना कहती है कि मैं अंधेरी रात में कुँवर को लेकर कुंभलगढ़ भाग जाऊँगी। सामली ने जब यह पूछा कि तुम्हारे चले जाने पर चंदन कहाँ रहेगा। पन्ना अपने पुत्र चंदन के लिए चिंतित नहीं है। उसका मानना है कि जहाँ तुलजा भवानी उसे रखेंगी, वह वहीं रहेगा। इस समय पन्ना को केवल कुँवर की चिंता है। वह महाराणा के नमक का हक अवश्य अदा करेगी क्योंकि उसके शरीर का रक्त महाराणा साँगा के नमक से बना है। चाहे कुछ भी हो वह उदयसिंह का बाल भी बाँका नहीं होने देगी और कर्तव्य पालन से पीछे नहीं हटेगी।

सामली आकर पन्ना को बाहर के हालत की सूचना देते हुए कहती है कि तुम भागने की सोच रही हो लेकिन यह संभव नहीं है क्योंकि लोगों ने बनवीर से कहते सुना है कि वह कुँवर को जीवित नहीं रहने देगा। अतः उसने अपने सैनिकों से महल को घेरने का आदेश दे दिया है। पन्ना चित्तौड़ के देवता एकलिंग (भगवान शिव) से आग्रह करती

है कि अब क्या होगा ? सामली कहती है कि बनवीर जैसे शक्तिशाली व्यक्ति से शत्रुता मोल लेने का साहस कोई नहीं कर पाएगा अर्थात् इस समय तुम्हारी सहायता कोई नहीं कर सकेगा। पन्ना कहती है कि मैं स्वयं भैरवी बनकर तलवार से कुँवर की रक्षा करूँगी। बनवीर से युद्ध करके मैं उसकी तलवार के टुकड़े-टुकड़े कर दूँगी। बनवीर को उदय सिंह तक पहुँचने के लिए मेरे रक्त रूपी नदी को पार करना होगा अर्थात् पहले उसे मेरी हत्या करनी होगी। बनवीर इस जीवन में मुझे पार नहीं कर पाएगा अर्थात् पन्ना कुँवर को किसी भी प्रकार से बचा ही लेगी।

बच्चो ! अब आपसे कुछ प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्न सुनकर उनके उत्तर आप तीन मिनट के अंतर्गत ही लिखोगे।

प्रश्न 1. सामली ने विक्रमादित्य की घटना को जानकर क्या अनुमान लगाया जो धाय माँ को बताया ?

प्रश्न 2. पन्ना ने सामली को क्या उत्तर दिया ?

पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. सामली ने महाराणा विक्रमादित्य की हत्या से यह अनुमान लगाया कि क्रूर बनवीर निष्कंटक राज्य करना चाहता है इसलिए वह मेवाड़ राज्य के उत्तराधिकारी कुँवर उदय सिंह की भी हत्या कर देगा।

उत्तर 2. पन्ना ने सामली को बताया कुँवर जी की रक्षा अवश्य होगी। मेवाड़ का उत्तराधिकारी केवल कुँवर ही बचे हैं। दासी पुत्र बनवीर को चित्तौड़ सहन नहीं करेगा

बच्चो ! अब एकांकी को आगे बढ़ाते हुए पृष्ठ संख्या-45 से पढ़ना व समझना आरंभ करते हैं। सामली तथ्य बताते हुए पन्ना से कहती है कि बनवीर अकेला नहीं है उसके साथ पूरा राज्य है। तुम अकेले उससे जीत नहीं सकती। तुम्हारा बलिदान व्यर्थ चला जाएगा क्योंकि वह तुम्हारी हत्या

करके कुँवर की भी हत्या कर देगी।

पन्ना ने फिर यह योजना बनाई कि वह बनवीर के सामने घुटने टेककर (हार मानकर) कुँवर के जीवन की भीख माँगेगी। उसने सोचा बनवीर भी मनुष्य है, उसके मन में कुछ तो दया होगी परन्तु सामली बोली कि बनवीर एक दासी पुत्र है और बहुत क्रूर है। उसने महाराणा विक्रमादित्य की भी निर्ममता से हत्या कर दी। अतः उसे मनुष्य कहना कतई उचित नहीं है। वह (बनवीर) तो जंगली पशु से भी गया बीता है। सामली ने बनवीर की तुलना साँप से करते हुए कहा कि जिस प्रकार एक साँप की दो जीभें होती हैं, उसी प्रकार बनवीर की भी दो जीभें हैं। उसकी रक्त की प्यास एक रक्त से नहीं बुझ सकती। उसे दोनों खून चाहिए। पहला रक्त उसने महाराज विक्रमादित्य का किया है। वह अपनी दूसरी प्यास कुँवर उदय सिंह के रक्त से बुझाएगा। अतः वह आता ही होगा। सामली की बात सुनकर पन्ना तुलजा भवानी का ध्यान करती है और प्रार्थना करती है कि भवानी उसे शक्ति दे कि वह कुँवर की रक्षा कर सके।

सामली उन्हें समझाते हुए कहती है कि यदि आप भवानी से युद्ध करने की शक्ति माँग रही हैं लेकिन आप कुँवर को नहीं बचा सकती क्योंकि आप अकेली उस बनवीर तथा उसकी सेना से युद्ध नहीं कर सकतीं। कोई योजना के द्वारा ही आप कुँवर को बचा सकती हैं।

तभी दरवाज़े पर आहट सुनकर पन्ना ज़ोर से पूछती है कि कौन है? कीरत बारी जो महल में जूठी पत्तलें उठाने का काम करता है, कक्ष में प्रवेश करता है। वह यहाँ बड़ी डलिया (टोकरी) लेकर जूठी पत्तलें उठाने आया है। वह अन्नदाता (धाय माँ) को बताता है कि बाहर सिपाहियों ने महल को घेर रखा है। वह जानना चाहता है कि आधी

रात को पूरे महल को घेरने की क्या सूझी है, क्यों महल में किसी के प्रवेश की मनाही है ? मैं तो शेज़ आकर महल में जूठी पत्तलें उठाता हूँ इसलिए उसके महल में आने-जाने पर किसी ने पाबंदी नहीं की। कीरत बारी ने बताया कि उसके पास तो ऐसा कुछ नहीं था केवल टोकरी और पत्ते होने पर उसे किसी ने नहीं रोका। वह कहता है कि जब से कुँवर जी बूँदी से आए हैं तब से चित्तौड़ में उजियारा फैल गया है। उसके अनुसार राणा विक्रमादित्य जब हर भजन करेंगे अर्थात् वे जब अपने जीवन की चौथी अवस्था (इस अवस्था में मनुष्य राजपाठ, मोह-माया त्याग कर स्वयं को केवल भगवान में लीन रखता है) में पहुँचेंगे तो राज्य का छत्र कुँवर को सौंप देंगे। जब कुँवर जी चित्तौड़ के राज्य को संभालेंगे तो सारा संसार उनका गुणगान करेगा। कुँवर जी का रूप इतना सुंदर है कि देखते ही बनता है। मैं तो उनके लिए अपने प्राणों का त्याग कर सकता हूँ।

पन्ना कुछ सोचकर सामली से बाहर जाकर देखने के लिए कहती है कि बाहर कितने सिपाही हैं और वे कहाँ-कहाँ खड़े हैं। कीरत को देखकर पन्ना को कुँवर की रक्षा का उपाय सूझता है। वह कीरत से जानना चाहती है इसलिए वह उससे पूछती है कि तुम कुँवर जी से बहुत स्नेह करते हो। कीरत बारी इसका उत्तर देते हुए कहता है कि इसे मैं बोल कर कैसे बता सकता हूँ यह तो केवल भावना है, जिसे केवल महसूस किया जा सकता है। यह स्नेह तो मौके पर ही देखा जा सकता है। मैं पहले भी कह चुका हूँ कि उनके लिए मैं अपनी जान तक दे सकता हूँ। ऐसी बातों पर सोच-विचार नहीं किया जाता। अवसर आने पर ही देख लेना कि मैं उनके लिए क्या कर सकता हूँ।

पन्ना कीरत को समझाती है कि कुँवर जी के प्राण संकट

में हैं और उन्हें बचाने का समय भी आ गया है। तुम्हें साबित करना होगा कि तुम उनके लिए क्या कर सकते हो। कीरत पन्ना से पूछना चाहता है कि ऐसा कौन है, जो इतना अधिक दुस्साहस कर सकता है। किसे अपने प्राणों की चिंता नहीं है। वह पूछता है कि कहीं तुम मज़ाक तो नहीं कर रही हो?

पन्ना के यह बताने पर कि कुँवर के प्राण संकट में हैं तो कीरत पूछता है कि ऐसा कौन है, जिसमें सूरज पर धूल उछाली है। अर्थात् सूरज पर धूल उछालने पर वह धूल सूरज पर तो नहीं पड़ेगी बल्कि उछालने वाले पर ही गिरेगी। ऐसा कौन है जो यह जानते हुए भी कि वह सफल नहीं होगा, यह प्रयास कर रहा है।

पन्ना ने कीरत को बताया कि बनवीर ऐसा दुस्साहस कर रहा है। वही कुँवर को मारने आ रहा है। तब कीरत बनवीर की बातें बताता है कि बनवीर तो महाराणा विक्रमादित्य के दरबार में बंदर की तरह करतब दिखाता है अर्थात् उनके इशारों पर नाचता है तथा उनकी चापलूसी करता है। नाटक अथवा दिखावा करके ही वह अपना जीवन व्यतीत कर रहा है।

पन्ना, कीरत की बातें सुनकर उसे समझाती है कि युद्ध करके हम कुँवर को नहीं बचा सकते। अतः कोई उपाय ही सोचना होगा। पन्ना, कीरत से नमक का मूल्य चुकाने और राजसिंहासन को सहारा देने के लिए कहती है। वह बताती है कि भवानी की कृपा से उसे एक उपाय सूझ गया है।

वह कीरत को समझाती है कि तुम कुँवर उदय सिंह को अपनी टोकरी में लिटाकर, ऊपर से जूठी पत्तलों से ढककर उन्हें महल से बाहर ले जाओ और श्मशान के पास बेरिस नदी के किनारे मेरा इंतज़ार करना। मैं वहीं पहुँच जाऊँगी।

पन्ना दुःखी मन से कहती है कि चित्तौड़ के राजकुमार के

ऐसे बुरे दिन आए हैं कि वे आज पत्तल ओढ़ कर सोएँगे। कीरत उन्हें ढाँढ़स बँधाते हुए कहता है कि यह सब भाग्य की बात है। आज वे मुसीबत में हैं, लेकिन कल वे सुखी जीवन व्यतीत करेंगे।

कीरत ने कहा कि आप धन्य हैं कि आपने मुझ जैसे छोटे आदमी को इस सेवा के लायक समझा। तभी सामली प्रवेश करती है और बताती है कि महल चारों तरफ़ से सिपाहियों से घिर गया है। तीनों तरफ़ से महल में तीस-तीस सिपाही हैं। केवल उत्तर की तरफ़ सात सिपाही हैं। सामली को शंका है कि उत्तर दिशा के बाकी सिपाही बनवीर को लेने गए होंगे ताकि वे आकर उदयसिंह की हत्या कर सकें।

पन्ना सामली से यह कहकर कि अब चिंता की आवश्यकता नहीं है, कीरत को बाहर छोड़ने चली जाती है। सामली पन्ना की इन बातों को समझ नहीं पाती और परेशान होकर मन ही मन बनवीर को कोसती है कि महाराणा विक्रमादित्य की हत्या के बाद वह कुँवर उदय सिंह की हत्या करने का प्रयास कर रहा है। जब उसकी (बनवीर) मृत्यु होगी तो मृत्यु के बाद उसे नरक मिलेगा और उसे नरक में भी चैन नहीं मिलेगा। वह भवानी से कुँवर की रक्षा करने की प्रार्थना करती है।

पन्ना आकर सामली को बताती है कि कुँवर की रक्षा हो गई है। सामली के पूछने पर पन्ना ने सारी योजना सामली को बताई कि 'कीरत बारी ने बड़ी चतुराई से कुँवर उदय सिंह को टोकरे में लिटा दिया और ऊपर से जूठी पत्तलों से ढक कर उन्हें सुरक्षित महल से बाहर निकाल लिया। इस प्रकार पन्ना ने कुँवर उदय सिंह को कीरत बारी के हाथों महल से बाहर भिजवा दिया अब उदयसिंह पूरी तरह से सुरक्षित थे।

बच्चो! आज हमने इस एकांकी को पृष्ठ संख्या-100

तक पढ़ एवं समझ लिया है। सभी छात्र इस एकांकी को पृष्ठ संख्या 100 तक पुन: पढ़ेंगे एवं पूर्णता से समझने का प्रयास भी करेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-
"राजा की हत्या करने के बाद दासी पुत्र मनुष्य है ? वह जंगली-पशु से भी गया बीता है।"

प्रश्न 1. वक्ता और श्रोता कौन-कौन है ?
प्रश्न 2. उपर्युक्त कथन में किस राजा की हत्या की बात कही गई है ?
प्रश्न 3. हत्या किसने की ? उसने हत्या करने से पूर्व क्या षड़यन्त्र रचा ? उसे जंगली पशु से भी गया-बीता क्यों कहा गया है ?
प्रश्न 4. पन्ना ने कुँवर उदयसिंह के प्राणों की रक्षा के लिए क्या योजना बनाई ?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]